International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिन्दु समाज पर रामायण का प्रभाव

- डा. बिहारीलाल मीना
व्याख्याता-संस्कृत
राजकीय महा वद्यालय, गंगापुर सटी(राज.)

प्रस्तावना

मह र्ष वाल्मी क कृत रामायण महाकाव्य संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य है। इसके रचयिता मह र्ष वाल्मी क आदिक व माने जाते हैं। रामायण मुख्यतः अनुष्टुप छन्द में लखी गई है। वाल्मी क इस छन्द के आ वष्कारक माने जाते हैं। [१] इस ग्रन्थ में सात अध्याय हैं , जो काण्ड नाम से जाने जाते हैं - बालकाण्ड , अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, कष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युध्यकाण्ड व उत्तरकाण्ड। इसमें कुल २४ हजार श्लोक हैं। अतः रामायण को 'चतु र्वंशति साहस्री संहिता' भी कहा जाता है। रामायण का परवर्ती साहित्य पर व्यापक प्रभाव पडा है। अतः यह संस्कृत साहित्य का प्रथम उपजीव्य काव्य माना जाता है।[२]

अर्वाचीन वद्वान अन्तः बाहय प्रमाणों के आधार पर रामायण को ६०० ईस्वी पूर्व की रचना मानते हैं। [३] भारतीय परम्परा में रामायण का समय त्रेतायुग का माना जाता है। हिन्दु कालगणना चतुर्युगी व्यवस्था पर आधारित है , जिसके अनुसार काल अव ध को चार युगों में बाँटा गया है। इस गणना के अनुसार रामायण का समय न्यूनतम ८,७०,००० वर्ष ईस्वी पूर्व सद्ध होता है।

हिन्दु समाज पर रामायण का प्रभाव

रामायण हिन्दु रघुवंशी राजा राम की जीवन गाथा है। रामचरित का सर्वांगपूर्ण वर्णन होने के कारण यह हिन्दु जनमानस का धा र्मक ग्रन्थ व आचार शास्त्र है। [४] वाल्मी क रामायण भारतीय संस्कृति का बेजोड नमूना है। भारतीय संस्कृति का जैसा हृदयस्प र्शी प्रतिबिम्ब रामायण में मलता है, वैसा वश्वसाहित्य में कसी देश की संस्कृति का वहाँ के साहित्य में नही मलता।

वाल्मी क रामायण में मनुष्य जीवन का सर्व वध आद र्श सहज , सरल, बोधगम्य एवं ला लत्यपूर्ण शैली में मलता है। अतः हिन्दू समाज पर सामाजिक , राजनीतिक, धा र्मक, सांस्कृतिक, पारिवारिक सभी क्षेत्रों में रामायण का अप्रतिम प्रभाव पड़ा है। दिग्द र्शन रूप में उक्त प्रभाव का अध्ययन यहाँ अपे क्षत है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रामायण में निरू पत भ्रातृप्रेम, पुत्र-प्रेम, संयुक्त परिवार, पातिव्रत धर्म आदि कई गुणों के आदर्श अतुलनीय हैं। रामायण आद र्श पता, आदर्श भ्राता, आदर्श पत्नी आदि ग्रहस्थ जीवन के आदर्शों का सुन्दर निरूपण करती है। यथा भातृ-प्रेम की सरल अ भव्यंजना:-

देशे - देशे कलत्रा ण, देशे - देशे च बान्धवा:

तं तु देशं न पश्या म, यत्र भ्राता सहोदरः।।[५]

रामायण में राम को एक उच्च आद र्शवान पुत्र एवं मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में चत्रित कया गया है। पता की आज्ञा उसके लए सर्वोपरि है। [६] वाल्मी क के राम सत्यनिष्ठ , नीतिकुशल, धर्मात्मा, वीर्यवान, पराक्रमी, धैर्यशील, जितेन्द्रिय, बु द्धमान, सुन्दर, तेजस्वी, प्रजावत्सल, शरणागतवत्सल, शास्त्रज्ञाता, प्रतिभासंपन्न एवं परम योद्धा नायक के रूप में उपस्था पत कये गये हैं। राम के उदात्त चरित्र के कारण 'रामादिवत् वर्तितव्यं न रावणादिवत् ' सदैव भारतीय हिन्दू समाज का आदर्श रहा है। सीता शील, सौन्दर्य एवं पातिव्रत की महान प्रतिमूर्ति है। वह हर वकट परिस्थिति में छाया की तरह पति के साथ बनी रहती है। पति के द्वारा त्याग कये जाने के उपरान्त भी उसे देवता ही मानती है। [७] रामायण भातृ-प्रेम का भी अनुकरणीय आद र्श प्रस्तुत करती है। जहाँ लक्ष्मण बड़े भाई के प्रति श्रद्धा , सम्मान एवं प्रेम के कारण वनवास तक साथ निभाते हैं, वही भरत ने राज्यपद पर बड़े भ्राता का अ धकार स्वीकार कर राज संहासन पर राम की चरण पादुकाएं रखकर एक न्यास के रूप में शासन कया।[८] कौशल्या एक आदर्श माता है, जो कैकेयी द्वारा अपने पुत्र राम पर कये गये अन्याय को भुलाकर उसके पुत्र भरत पर औरस पुत्र की भांति ममता रखती है। हनुमान एक आद र्श भक्त है , जो सेवक भाव से राम की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं।[९] रावण के दुःचरित्र से यह शक्षा मलती है क अति हमे शा बुरी होती है। घमण्डपूर्ण व्यवहार एक दिन व्यक्ति की अधोगति का कारण बनता है। रामायण में व र्णत आदर्श चरि त्रों से भारतीय हिन्दू समाज सदियों से अनुप्रा णत रहा है। उसने सदैव इन उदात्त चरित्रों का अनुसरण कर अपने व्यक्तिगत , पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को सुखद बनाया हैं।

रामायण हिन्दूओं की रीतिनीति और धर्म-कर्म को प्रभा वत करती हुई आज भी उनके सामने सत्य, सदाचार एवं कर्तव्यपालन का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करती है।[१०] हिन्दू परिवार में आज भी जन्म एवं ववाह के अवसरों पर रामजन्म सम्बन्धी एवं राम ववाह सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं। व्यक्ति की अन्तिम यात्रा 'राम नाम सत्य है' की ध्वनि के साथ होती है। भारत के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कोने-कोने में राम के मन्दिर हैं। लाखों व्यक्ति प्रतिदिन रामायण का पाठ करते हैं। अयोध्या , रामेश्वर, पञ्चवटी, चत्रकूट आदि तीर्थों की यात्रा करते हैं।[११]

रामायण का हिन्दू राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वाल्मी क राष्ट्रीय क व है। रामायण में व र्णत रामराज्य का आदर्श सम्पूर्ण व श्वराजनीति के लए अनुकरणीय है। राम राजनीति के महनीय उपासक थे। उनके समान नीतिमान राजा दूसरा नही हुआ। "न राम सदृष्शो राजा पृ थव्यां नीतिमानभूत्" (शुक्रनीति ४/६/१३४६)। इस लए उनके द्वारा व्याख्यात तथा आचरित नीति ही राजाओं के लए मान्य नीति है।[१२] वाल्मी क रामायण के अनुसार राजतन्त्र होते हुए भी भारत में लोकतंत्र था। इस लए महाराज द शरथ ने राम को राजपद सौपने के लए जनस्वीकृति ली।[१३] राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजारंजन था। राम ने लोक आराधन के लए वैय क्तिक स्नेह, दया, सौख्य तथा प्राणवल्लभा सीता तक का परित्याग कर लोक के सम क्ष यह आदर्श प्रस्तुत कया क एक शासक के लए जनभावना का सम्मान सर्वोपरि कर्तव्य होता है। भारतीयों ने रामराज्य को सदा से सुराज्य का पर्यायवाची माना है और आज भी वही हमारी शासन व्यवस्था का आद र्श है।

भारतीय हिन्दू समाज पर रामायण कालीन संस्कृति का भी गहरा प्रभाव परिल क्षत होता हैं। रामायण में तीन संस्कृतियाँ एक साथ प्रवाहित हैं- **1.** आर्य संस्कृति **2.** राक्षस संस्कृति एवं **3**. वानर संस्कृति अर्थात जनजाति संस्कृति। सांस्कृतिक व वधता में एकता का सूत्र ही रामायण का वास्त वक प्रतिबिम्ब है। वाल्मी क रामायण से अनुपा णत होकर सम्पूर्ण हिन्दू समाज में वै वध्यपूर्ण संस्कृतियों का अस्तित्व होते हुए भी उनमें एकता एवं सहअस्तित्व के सूत्र परे रहें हैं। आज भी हिन्दू समाज में सभी वर्गो के साथ जनजाति , अनुसू चत जनजाति समाज ही नहीं वरन अन्यान्य सभी समाजों की संस्कृतियाँ एक लक्ष्य के साथ प्रवाहमान दिखाई देती हैं। सुग्रीव और वभीषण से मैत्री, केवट पर व श्वास, शबरी से प्रेम और वानर संस्कृति से मजबूत सम्बन्ध राम को सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति का राष्ट्रनायक बनाते है। वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को रामकथा में रस सक्त कर सरल ल लत शैली में जनसामान्य तक व्यवहार्य बना देना रामायण का वै शठ्य है। रामायण ने समाज के हर वर्ग को आक र्षक कया। इसने सदियों से ग्रामीण-नगरीय, अनपढ़- वद्वान, स्त्री-पुरूष, बालक-वृद्ध सभी को अपनी ओर आक र्षत कर उनका मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन कया है।[१४]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वाल्मी क की रामकथा ने मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन पर भी प्रभाव डाला। १२वीं शदी में रामानुजाचार्य ने राम को वष्णु का अवतार घो षत कर द क्षण भारत में एकेश्वरवाद का प्रचार कया। तेरहवी-चौदहवी शताब्दी में यही काम उत्तर भारत में रामानन्द ने कया। रामानन्द के शष्य कबीर ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। बंगाल में चैतन्य महाप्रभू ने व पंजाब में गुरूनानक ने भक्ति आन्दोलन का प्रसार कया। १६ वीं शदाब्दी में तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना कर रामकथा को जन-जन तक पहुँचा दिया।

भारतीय कलाओं पर भी रामायण का प्रभाव पड़ा। चत्रकला की राजपूत व कांगडा शै लयों पर रामायण के द ृश्य मलते हैं। जोधपुर के संग्रहालय में १०० वर्ष से अ धक प्राचीन चत्रों का एक संग्रह मलता है , जिसमें ९१ रामायण वषयक चत्र वद्यमान है। प्राचीन भारतीय स्थापत्यकला के उपलब्ध नमुनों पर रामायण की छाप है। साँची , अमरावती, भारहुत, उदय गरि, बोधगया, मथुरा, ना सक और भुवेश्वर के प्राचीन अवशेषों पर रामायण में व र्णत प्रासादों, शखरों, सजावट और निर्माणकला का प्रभाव परिल क्षत होता है। कुमारगुप्त प्रथम की एक मुद्रा पर अयोध्या के राम गमन का चत्र उत्कीर्ण है। गुप्तकालीन द शावतार मन्दि र तथा वजयनगरकालीन हजारा श्रीराम मन्दिर में रामायण के कई द ृश्य खुदे हैं। पहाड़पुर (बंगाल) के आठवीं शदीं के मन्दिर में रामायण की कई घटनाएँ खुदी हैं। रामायण की छाप प्राचीन शलालेखों पर भी मलती हैं।[१५]

रामायण परिवर्ती साहित्य के लए उपजीव्य काव्य है। संस्कृत साहित्य के प्रायः सभी प्रमुख क वयों ने रामकथा को आधार बनाया। का लदास कृत रघुवं श, महाप्रवर कृत सेतुबन्ध , कुमारदास कृत जानकीहरण, भ ि कृत रावणवध, क्षेमेन्द्र कृत रामायणमंजरी जैसे प्र सद्ध महाकाव्यों का उपजीव्य रामायण है। बोद्धग्रन्थ 'दशरथ-जातक' व जैनक व वमलसूरि कृत 'पउम चरिअ' भी रामकथा से प्रभा वत हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी रामायण से प्रेरित अनेक कृतियों की रचना हुई है। जैसेः- त मल 'कंबन रामायण', तेलुगु 'द् वताद रामायण', कन्नड 'तोरवे रामायण', मलयालम 'रामचरित', मराठी 'भावार्थ रामायण' आदि। वाल्मी क रामायण से प्रेरित होकर सन्त तुलसीदास ने रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना की जो वाल्मी क के द्वारा संस्कृत में लखे गये रामायण का हिंदी संस्करण है। रामचरितमानस में हिंदू आदर्शों का उत्कृष्ट वर्णन है। इसी लये इसे हिंदू धर्म के प्रमुख ग्रंथ होने का श्रेय मला हुआ है और प्रत्येक हिंदू परिवार में भक्तिभाव के साथ इसका पठन पाठन कया जाता है। रामायण से ही प्रेरित होकर मै थलीशरणगुप्त ने पंचवटी तथा साकेत नामक खंडकाव्यों की रचना की। रामायण में लक्ष्मण

की पत्नी उ र्मला के उल्लेखनीय त्याग को शायद भूलवश अनदेखा कर दिया गया है और इस भूल को साकेत खंडकाव्य रचकर मै थलीशरण गुप्त जी ने सुधारा है

निष्कर्ष:

रामायण हिन्दू समाज के व वध आदर्शों का अक्षय कोश है। इसमें गृहस्थ जीवन के आदर्शों , उदात्त नैतिक मूल्यों, राजनीतिक मानकों व सांस्कृतिक मान्यताओं का अप्रतिम प्रतिबिम्ब मलता है। इसके मूल्य सदियों से हिन्दू जीवन व वचारों में रच-बस गए हैं। हिन्दू जीवन की प्रेरणा का मूल स्रोत आज भी वाल्मी क रामायण ही है। यह वैष्णव सम्प्रदायों में एक उपास्य धा र्मक ग्रंथ है। परवर्ती भारतीय कलाओं पर ही नहीं अ पतु संस्कृत भाषा एवं अर्वाचीन प्रांतीय भाषाओं की काव्यकृतियों पर रामायण का अद्भूत प्रभाव पड़ा।

संदर्भः-

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास: आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृ.सं. २४

२. वही, पृ. सं. २२

३. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास: डॉ0 क पल देव द् ववेदी, पृ. सं. ११०

४. वही, पृ. सं. ११४

५. वाल्मीकीय रामायण, गीता प्रेस गोरखपुर, भाग - 1 युद्धकाण्ड, १०१.१५

६. वही, २१.२१

७. वही, उत्तरकाण्ड ४८.१७

८. वही, अयोध्या काण्ड ११५.२४.२७

९. वही, सुन्दर काण्ड ४१.७

१०. रामायण कालीन संस्कृति, लेखक: प्रशान्त कुमार नानुराम व्यास पृ. सं.

११. रामायण मीमांसा: करपात्री जी पृ. सं. १९

१२. संस्कृत साहित्य का इतिहासः बलदेव उपाध्याय पृ. सं.

१३. रामायण, अयोध्या काण्ड १.४६

१४. रामायण कालीन संस्कृति पृ. सं. ३००, ३०१

१५. हिन्दू संस्कृतिः कल्याण अंक, तृतीय संस्करण गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. सं. ३१३